

Published by:				
NEERAJ PUBLICATIONS				
Sales Office : 1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006				
<i>E-mail</i> : info@neerajignoubooks.com				
Website: www.neerajignoubooks.com				
Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only         Typesetting by: Competent Computers         Printed at: Nordty Printer				
<b>Notes:</b> <ol> <li>For the best &amp; upto-date study &amp; results, please prefer the recon</li> </ol>	nmended textbooks/study ma	aterial only.		
<ol> <li>This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.</li> </ol>				
<ol> <li>The information and data etc. given in this Book are from the bes complete and upto-date information and data etc. see the Govt. o the Board/University.</li> </ol>				
4. Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.				
5. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can for the price of the Book.	°	-		
<ol> <li>If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested a rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.</li> </ol>	5			
<ol> <li>The number of questions in NEERAJ study materials are indicat paper.</li> </ol>	ive of general scope and de	sign of the question		
8. Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.				
9. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.				
10. Subject to Delhi Jurisdiction only.				
© Reserved with the Publishers only.				
<b>Spl. Note:</b> This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.				
How to get Books by	Post (V.P.P.	.]?		
If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website <b>www.neerajignoubooks.com</b> . You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).				
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website <b>www.neerajignoubooks.com</b> . No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges. We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).				
<b>NEERAJ PUBLICATIONS</b>				
(Publishers of Educational Books)				
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company ) <b>1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006</b>				
Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501				
E-mail: info@neerajignoubooks.com Website: www.neerajignoubooks.com				

CONTENTS				
लागत लेखा के मूल तत्त्व ( ELEMENTS OF COSTING)				
Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)				
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-4			
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-4			
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-3			
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-4			
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-4			
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-4			
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1-3			
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-5			
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1-4			
Question Paper—December, 2010 (Solved)	1-3			
क्रम सं. Chapterwise Reference Book पृष्ठ				
क्रम सं. Chapterwise Reference Book	দৃষ্ঠ			
क्रम सं. Chapterwise Reference Book मूल संकल्पनाएँ	पृष्ठ			
	<i>पृष्ठ</i> 1			
मूल संकल्पनाएँ	पृष्ठ 1 5			
मूल संकल्पनाएँ 1. प्रकृति तथा क्षेत्र	1			
मूल संकल्पनाएँ 1. प्रकृति तथा क्षेत्र 2. लागत की संकल्पना तथा उसका परिकलन	1			
मूल संकल्पनाएँ 1. प्रकृति तथा क्षेत्र 2. लागत की संकल्पना तथा उसका परिकलन सामग्री और श्रम	1			
<ul> <li>मूल संकल्पनाएँ</li> <li>1. प्रकृति तथा क्षेत्र</li> <li>2. लागत की संकल्पना तथा उसका परिकलन</li> <li>सामग्री और श्रम</li> <li>3. क्रय, भण्डारण और निर्गमन</li> </ul>	1 5 10 16			

क्रम सं. अध्याय	पृष्ठ संख्या
उपरिव्यय	
7. उपरिव्ययों का वर्गीकरण और वितरण	41
8. फैक्टरी उपरिव्ययों का अवशोषण	47
9. अन्य उपरिव्ययों का लागत लेखांकन	54
लागत निर्धारण विधियाँ	
10. इकाई लागत निर्धारण विधि	58
11. लागत और वित्तीय लेखों का समाधान	68
12. उपकार्य एवं ठेका लागत निर्धारण विधि	74
13. प्रक्रिया लागत निर्धारण विधि	89
	00



# **QUESTION PAPER**

(June – 2019)

#### (Solved)

#### लागत लेखा के मूल तत्त्व

समय : 2 घण्टे ]

। अधिकतम अंक : 50 ( कुल का 70% )

नोट: खण्ड-क में से कोई दो प्रश्न तथा खण्ड-ख में से कोई दो प्रश्न कीजिए।

#### खण्ड–क

प्रश्न 1. लागत लेखा तथा वित्तीय लेखा में अंतर स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 4

प्रश्न 2. (क) एक अच्छी सामग्री नियंत्रण प्रणाली के मुख्य लाभ क्या हैं? उदाहरणों सहित व्याख्या कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-10, प्रश्न 1, 2

(ख) 'अमिक आवर्त' से क्या तात्पर्य है? अमिक, आवर्त के कोई पांच दूर किए जा सकने वाले कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-34, प्रश्न 10, 11 प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर लघु टिप्पणियां लिखिए–

(क) लागत केन्द्र

उत्तर–लागत केन्द्र से तात्पर्य किसी क्षेत्र, व्यक्ति या मशीनों से है, जिन्हें किसी वस्तु की लागत को नियंत्रित करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। लागत केन्द्र चार प्रकार के होते हैं–

(1) प्रक्रिया लागत केन्द्र – यह एक ऐसा लागत केन्द्र है, जहां पर वस्तु का उत्पादन लगातार एक प्रक्रिया से दूसरी प्रक्रिया में होता रहता है।

(2) उत्पादन लागत केन्द्र – उत्पादन लागत केन्द्र से अभिप्राय ऐसे केन्द्र से है, जहां कच्चे माल को खरीदा तथा विभिन्न विभागों में वितरण किया जाता है।

(3) सेवा लागत केन्द्र – यह एक ऐसा लागत केन्द्र है, जो उत्पादन केन्द्र की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए एक सहायक की भूमिका निभाता है।

(4) विनिर्माण लागत केन्द्र – यह एक ऐसा लागत केन्द्र है, जहां सभी मशीनों तथा व्यक्ति जो एक जैसा कार्य करते हैं. सम्मिलित होते हैं।

#### (ख) उपरिव्ययों का अति-अवशोषण

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-46, प्रश्न 1

**इसे भी देखें**--यदि उत्पादन क्रियाओं तथा उत्पादों की लागत में स्थिर परिवर्तनशल सभी खर्चों को सम्मिलित कर दिया जाता है, तो इसे अवशोषण लेखांकन कहते हैं। इसे सम्पूर्ण लेखांकन भी कहते हैं, क्योंकि इस विधि के अन्तर्गत लागत उत्पादन का चार्ज कर दिया जाता है।

अति-अवशोषण के कारण–

- उपरिव्ययों की लागत का अनुमान लगाने की त्रुटि।
- आधार (अथवा आउटपुट या लेबर ऑवर या मशीन
- अावर्स) की मात्रा का अनुमान लगाने में त्रुटि।
- उत्पादन क्षमता में अवांछनीय परिवर्तन।
- उत्पादन की विधि में अवांछनीय परिवर्तन, जिसके परिणामस्वरूप उपरिव्यों की राशि में परिवर्तन होता है।
- निश्चित अवधि में ओवरहेड्स की मात्रा में मौसमी उतार-चढ़ाव।

ओवरहेड्स का अधिक अवशोषण उत्पादन की लागत को प्रभावित करता है। उपरिव्यों का अति-अवशोषण उत्पादन की लागत को उस सीमा तक बढ़ाता है, जब तक कि राशि अवशोषित हो रही है।

(ग) प्रक्रिया लागत-निर्धारण पद्धति उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-13, पृष्ठ-89, प्रश्न 1 (घ) बिन कार्ड

```
उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-19, प्रश्न 7 (1)
```

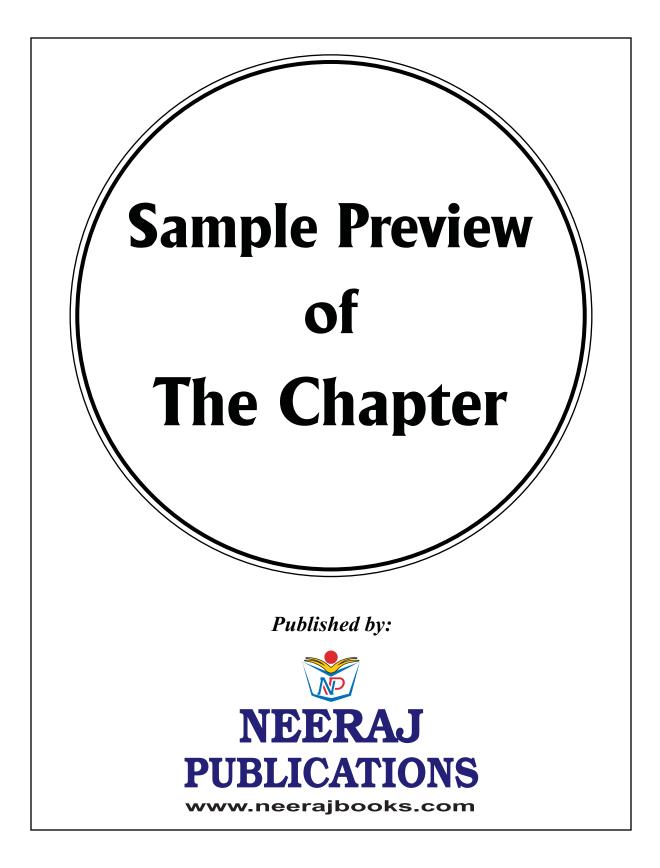
खण्ड–ख

प्रश्न 4. मार्च, 2019 मास से संबंधित निम्नलिखित विवरण के आधार पर (i) मूल लागत, (ii) फैक्टरी लागत, (iii) उत्पादन लागत, (iv) बेचे गए माल की लागत,

	₹	कच्चा माल	₹	₹ 8,600	
प्रत्यक्ष मजदूरी	16 ,000	किण्या माल निर्माणधीन कार्य (WIP		12,000	
प्रत्यक्ष नजपूरा फैक्टरी उपरिव्यय	16,000	तैयार माल	14,000	12,000	
बेचे गए माल की लागत	56,000	<u>अन्य आंकड़े:</u>	14,000	18,000	
सामग्री का क्रय	36,000	विक्रय व्यय		3 ,400	
मालसूची खातों में निम्नलिखित		प्रशासन व्यय		2,600	
नालसूचा खाता न गम्गालाखत । दिखाए हुए हैं–	। प्रारान्मक एप आतम	मास का विक्रय		75,000	
Ans.				,,,,,,,	
	Cost	Sheet			
Particulars				Amount	
Opening stock of raw mate	rials	8	000		
Add: Raw materials p	ırchased	36	000		
Less: Closing stock of raw materials (8,600)					
Direct Raw Material				35,400	
Add: Direct Labour				16,000	
Prime Cost					
Add: Factory Overheads 10,000					
Add: Opening Work in process8,000Less: Closing work in process(12,000)					
				6,000	
		Factory Cost		57,400	
Add: Administration E				2,600	
WWW_r		of Production	con	60,000	
Add: Opening stock of	f finished goods	14	000		
Less: Closing stock of	finished goods	(18,0	(000	(4,000)	
	Cos	t of goods sold		56,000	
Add: Selling expenses				3,400	
		Cost of sales		59,400	
Profit (75,000 – 59, 400)					
	Sale	es for the month		75,000	

2 / NEERAJ : लागत लेखा के मूल तत्त्व (JUNE-2019)

	₹
कार्यस्थल पर श्रम	4 ,05 ,000
कार्यस्थल पर सीधे प्राप्त हुई सामग्री	4 ,20 ,000
स्टोर से प्राप्त हुई सामग्री	81 ,200



के तत्त्व (Elements of Cost Accounts)

लागत-निर्धारण

(मूल संकल्पनाएँ

# प्रकृति तथा क्षेत्र

(परिचय

लागत लेखा लेखांकन की एक विशिष्ट शाखा है। इसकी आवश्यकता वित्तीय लेखांकन की सीमाओं और आधुनिक उद्यमों के प्रबन्ध में जटिलताओं के कारण हुई। इसका सम्बन्ध लागतों के निर्धारण तथा नियंत्रण से है।

प्रस्तुत अध्याय में हम लागत रेखा की आवश्यकता, इसकी परिभाषा और उद्देश्यों, लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में अंतर, लागत लेखांकन के लाभ और किसी संगठन में लागत निर्धारण प्रणाली की स्थापना पर चर्चा की गई है।

#### ( बोध व स्वपरख प्रश्न )

प्रश्न 1. आधुनिक अर्थव्यवस्था में लागत निर्धारण की क्या आवश्यकता है?

**उत्तर**–आधुनिक अर्थव्यवस्था में लागत निर्धारण के कारण निम्नलिखित हैं–

 व्यापक प्रतिस्पर्धा –प्रतिस्पर्धा आन्तरिक व बाह्य बाजारों में निरंतर बढ़ती जा रही है। केवल वही उत्पादक इस चुनौती का सामना कर सकते हैं, जो लागतों पर कठोर नियंत्रण रखते हों और कीमत निर्धारण की सही नीतियों का पालन करते हों।

 सीमित साधन–साधनों का अत्यधिक अभाव है व ऐसी स्थिति में क्षति तथा हानियों को कम करके इनके प्रभावी व मितव्ययी उपयोग की अपेक्षा की जाती है।

3. जटिल प्रबन्ध-औद्योगिक संगठनों का प्रबन्ध बहुत ही जटिल कार्य हो गया है, जो उत्पादन के हर क्षेत्र में तथा क्रिया के प्रत्येक चरण पर ध्यान देने व कार्य करने की माँग करता है।



4. शीघ्र निर्णय–विश्वसनीय आँकडों के द्वारा समर्थित पर्याप्त सूचना के आधार पर उचित व शीघ्र निर्णयों की जरूरत होती है।

5. विशेष दायित्व–उपयुक्त किस्म, उचित मूल्यों और नियमित आपूर्ति आदि के रूप में प्रत्येक व्यापार एक बड़े सामाजिक दायित्व का सहभागी है।

6. अनूकूलतम लाभ–प्रत्येक व्यवसाय का उद्देश्य अपने लाभ को अधिक से अधिक बढा़ना होता है और जो मुख्य रूप से वित्तीय, कार्मिक, उत्पादन व विपणन क्रियाओं के कुशल निष्पादन पर आधारित होता है।

प्रश्न 2. वित्तीय लेखांकन की सीमाओं का उल्लेख कीजिए। उत्तर–वित्तीय लेखांकन की सीमाएँ इस प्रकार हैं–

 यह संगठन के हर विभाग, प्रक्रिया, उत्पाद अथवा अन्य क्रिया के विषय में विस्तृत प्रचालन जानकारी नहीं देता है। यह सम्पूर्ण उद्यम के लिये केवल आय, व्यय, परिसम्पत्तियों व देयताओं की जानकारी देता है।

 यह व्यय को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अथवा स्थिर व परिवर्तनशील भागों में नहीं बाँटता। लागतों को उत्पादों के उत्पादन के हर चरण में बाँटा नहीं जाता जो नियंत्रणीय और अनियंत्रणीय मदों को दर्शा सके।

 यह लागतों के प्रमुख तत्त्वों अर्थात् सामग्री व श्रम पर नियंत्रण की एक उचित प्रणाली की स्थापना नहीं करता। इसलिए सामग्री की क्षति व हानियाँ बिना परीक्षण के रह जाती हैं तथा श्रम के समय का उपयोग अनियंत्रित रह जाता है।

 यह ऐसे मानक (standards) व प्रतिमान (norms) स्थापित नहीं करता, जिनसे लागत और विभिन्न मदों की परस्पर तुलना की जा सके।

#### 2 / NEERAJ : लागत-निर्धारण के तत्त्व

5. यह संगठन द्वारा निर्मित विभिन्न उत्पादों अथवा उसके द्वारा की गयी सेवाओं के विक्रय मूल्य के लिये लागत की पर्याप्त जानकारी नहीं देता।

6. इसमें लागत के विषय में ऐतिहासिक जानकारी होती है, जो लेखांकन वर्ष के अन्त में संकलित की जाती है। इसलिए समय-समय पर लागत-आँकडे़ इकट्ठा करना कठिन हो जाता है।

7. क्योंकि वित्तीय लेखांकन से उत्पाद के अनुसार लागत व लाभ से सम्बन्धित सूचना नहीं मिलती, अत: लाभ या हानि के कारणों का प्रभावी रूप से विश्लेषण नहीं किया जा सकता। वित्तीय लेखे अधिकाधिक एक तापमापी (Thermometer) की तरह हैं, जो शरीर का केवल तापमान दिखा सकता है, किन्तु उसके स्वास्थ्य का विश्लेषण अथवा निदान करने में सहायक नहीं हो सकता।

प्रश्न 3. 'लागत लेखांकन' से क्या आशय है? इसके प्रमुख उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर – 'लागत लेखांकन' से हमारा आशय लागतों के लेखांकन की प्रक्रिया से है। इसका आरम्भ सभी आय व व्यय के लेखन से होता है और अन्त लागतों को ज्ञात करने व नियंत्रित करने के लिए आवधिक विवरण और रिपोर्ट बनाने पर होता है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि

- (क) लागत लेखांकन लागतों के लेखाकन की एक प्रक्रिया है।
- (ख) इसमें वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन से सम्बन्धित आय तथा व्यय जोड़े जाते हैं।
- (ग) यह सांख्यिकीय आँकड़े देता है, जिनके आधार प
   भविष्य के अनुमान बनाए जा सकते हैं।
- (घ) यह उत्पादकों व सेवाओं की लागतें जानने व नियंत्रित करने के आधार के रूप में कार्य करता है।
- (ङ) इसमें (i) विश्लेषण, (ii) लेखन, (iii) बजटों और मानकों की स्थापना, (iv) तुलना व (v) रिपोर्ट लिखने सम्बन्धी कार्य सम्मिलित होते हैं।
- लागत लेखांकन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं-
- 1. उत्पादों व सेवाओं की लागतें ज्ञात करना;
- विक्रय मूल्य निश्चित करने अथवा टेण्डर भरने में सहायक;
- 3. कुल लागत के विभिन्न तत्त्वों का विश्लेषण व वर्गीकरण;
- क्षति (wastage) के कारणों का पता लगाना व इसे रोकने के लिये उचित उपचार करना;
- 5. विश्लेषण और तुलनाओं द्वारा लागतों का नियंत्रण;
- प्रबन्ध को लागतों से सम्बन्धित सम्पूर्ण सूचना पहुँचाना व प्रबन्धकीय निर्णय लेने में सहायता करना;
- विभिन्न विभागों, शाखाओं, उत्पादों इकाइयों, प्लांटों तथा मशीनों की सापेक्षिक कुशलता आँकना व उनकी उत्पादिता वृद्धि के उपाय निकालना; तथा

 उत्पादन, विक्रय व लाभ के अन्तरिम पुनर्विलोकन हेतु अथवा भविष्य की क्रियाओं के नियोजन के लिये प्रबन्ध को जब व जैसे भी लागत विवरणों की जरूरत है उन्हें मुहैया करना।

प्रश्न 4. लागत लेखांकन और वित्तीय लेखांकन में क्या अंतर हैं?

उत्तर–लागत लेखांकन व वित्तीय लेखांकन में प्रमुख अंतर निम्नलिखित हैं–

· · ·				
खे रीर		लागत लेखांकन		वित्तीय लेखांकन
रार का	1.	वस्तुओं अथवा सेवाओं को	1.	व्यवसाय के परिचालन
ମଧା		लागत ज्ञात करता है।		परिणाम तथा वित्तीय स्थिति
্ৰ				को प्रस्तुत करता है।
2	2.	प्रबन्ध की सूचना सम्बन्धी	2.	कम्पनी के विषय में वित्तीय
रुन		जरूरतें पूरी करता है।		सूचना, उसके अंशधारियों,
से				लेनदारों, कर्मचारियों व
त्रए				सम्पूर्ण समाज को उपलब्ध
<b>त्हा</b>				कराता है।
	3.	इसके पश्चात् बाह्य अंकेक्षण	3.	एक स्वतंत्र अंकेक्षण प्रणाली
त्या		प्रणाली जरूरी नहीं होती।		की जरूरत होती है, ताकि
				यह निर्धारित किया जा सके
गय				कि वित्तीय विवरण स्थिति
				का सही तथा उचित चित्र
पर				प्रस्तुत करते हैं।
त्रेत	4.	व्यय को सामग्री लागत, श्रम	4.	व्यापार की प्राप्तियों व
30		लागत, स्थिर उपरिव्यय व		भुगतानों से सम्बद्ध सभी
मौर		परिवर्ती उपरिव्यय में विभाजित करता है।	5	लेन-देनों को डेबिट और क्रेडिट प्रविष्टियों में बाँटा
बने		विभाजित करता हा		क्राडट प्रावाष्ट्या म बाटा जाता है।
	5.	व्ययों की लागत शीट, प्रक्रम	5.	जाता ह। सम्पूर्ण लेन-देनों को दो
	э.	व्यया का लागत शाट, प्रक्रम लेखा, ठेका लेखा अथवा	э.	सम्पूर्ण लन-दना का दा वित्तीय विवरणों में संघटित
		लखा, ठफा लखा जयपा किसी अन्य लेखा विवरण		करता है, ये वित्तीय विवरण
में		में दिखाता है।		हैं-व्यापार व लाभ-हानि
				खाता तथा तुलन-पत्र।
ण;	6.	कर-निर्धारण का आधार नहीं	6.	यह व्यापार के कर दायित्व
इसे		बनता क्योंकि यह कोई		का निर्धारण करने के आधार
		वित्तीय अभिलेख नहीं है।		के रूप में कार्य करता है।
व	7.	मानक लागत व वास्तविक	7.	व्यापार के प्रचालन के
ч		लागत में अनुकूल व प्रतिकूल		अन्तर्गत होने वाले केवल
ाथा		अन्तरों को ज्ञात करने के		वास्तविक लेन-देनों का
रता		लिये विचरण विश्लेषण की		लेखन करता है।
		जरूरत होती है।		

	लागत लेखांकन		लागत लेखांकन
8.	निरन्तर अन्तराल पर लागत	8.	वर्ष में एक अथवा दो बार
	से सम्बन्धित सूचना प्रस्तुत		वित्तीय सूचना प्रस्तुत करता
	करता है।		है।
9.	विशिष्ट उत्पादों, शाखाओं,	9.	सम्पूर्ण व्यापार के परिचालन
	विभागों, कार्यों अथवा प्रक्रिया		परिणाम देता है।
	पर लाभ अथवा हानि ज्ञात		
	करता है।		
10	. लागत आँकड़ों का उपयोग	10.	विगत लेखांकन अवधि में
	नियंत्रण करने व क्षति रोकने		हुई मुख्य प्रवृत्तियों का
	के लिये करता है और इन		परिकलन करने के लिये
	आँकडो़ं की सहायता से		लेखांकन अनुपात का प्रयोग
	भविष्य में परिचालन कुशलता		करता है।
	को बढा़ता है।		
11	. भौतिक इकाइयों यथा मजदूरी	11.	लेन-देनों का लेखन लेखा
	के घंटे, मशीन के घंटे आदि		पुस्तकों में केवल मौद्रिक
	का भी लेखा-जोखा देता है।		इकाइयों में करता है।

प्रश्न 5. लागत लेखा की एक प्रभावी और व्यवस्थित प्रणाली किस तरह से सहायक होती है?

**उत्तर**—लागत लेखा की एक प्रभावी और व्यवस्थित प्रणाली अधोलिखित प्रकार से सहायक होती है—

- उत्पादन, सामग्री, लागत, स्टोर, श्रम, प्लांट की क्षमता आदि के सम्बन्ध में लगातार सूचना देने में, जिससे उत्पादन के नियोजन में मदद मिलती है।
- उन अनुत्पादक क्रियाओं, हानियों, साधनों की क्षति, बेकार मशीन और अकुशलता के क्षेत्र को जानने में जिनके लिये तुरन्त उपचार करने की जरूरत है।
- 3. उचित तथा विश्वसनीय लागत आँकडों के संकलन में।
- 4. बजट निर्माण व व्यावसायिक पूर्वानुमान में।
- मानकों की स्थापना व विचरण के विश्लेषण से परिचालन की कुशलता के मापन में।
- 6. विक्रय मूल्य निर्धारित करने में।
- विभिन्न अवधियों, उत्पादों, विभागों तथा फर्मों की लागतों की तुलना करने में।
- 8. लागतों और आगम का पूर्वानुमान लगाने में।
- 9. स्टॉक नियंत्रण व स्टॉक की आवधिक परीक्षण में।
- निष्क्रिय क्षमता तथा संस्थापित क्षमता (installed capacity) से कम पर कार्य करने की लागत के ज्ञान में।

#### प्रकृति तथा क्षेत्र / 3

- लागत तथा लाभ को बारम्बार जानने तथा उनके कारणों की सविस्तार जाँच करने में।
- तथ्यों व आँकड़ों के आधार पर निर्णय लेने में व विभिन्न विषयों हेतु उचित नीतियों के प्रतिपादन में। ये मामले हैं:
  - (i) उत्पादन का स्तर
  - (ii) स्वयं निर्मित करने अथवा क्रय का निर्णय
  - (iii) पुराने उपकरण का प्रतिस्थापन अथवा आधुनिकीकरण
  - (iv) मंदी के समय में उत्पादन बंद करना अथवा जारी रखना
  - (v) नवीन उत्पाद निर्माण अथवा पुराने उत्पादों को हटा देना
  - (vi) विशेष आदेश को स्वीकार करना
  - (vii) मशीन के स्थान पर श्रम की प्रतिस्थापना।

प्रश्न 6. लागत लेखा की एक प्रभावी प्रणाली की क्या अपेक्षाएँ हैं?

उत्तर—लागत लेखा की एक प्रभावी प्रणाली की अपेक्षाएँ निम्नलिखित हैं—

- 1. यह व्यवसाय को प्रकृति व जरूरतों हेतु उपयुक्त है।
- परिचालन में सरल व आसान है। इसके लिये मानक प्रारूप प्रयोग किये जाने चाहिए व सभी सम्बद्ध व्यक्तियों को प्रत्येक अभिलेख व प्रतिवेदन के उद्देश्य स्पष्ट होने चाहिए।
- 3. इसे कर्मचारियों से पूर्ण सहयोग मिलता है।
- यह लागत निर्धारण विवरण बनाने तथा प्रस्तुत करने के लिये जरूरी सूचना देने में शीघ्रता व नियमितता सुनिश्चित करती है।
- यह वित्तीय लेखांकन प्रणाली से निकट से सम्बन्धित है तथा लागत लेखों व वित्तीय लेखों से प्राप्त परिणामों के मिलान को सरल करती है।
- 6. यह लागत नियंत्रण में प्रभावी योगदान देती है।
- यह वास्तविक परिणामों व अनुमानों की तुलना के लिये प्रावधान करती है।
- प्रणाली में पर्याप्त लचीलापन है, जिससे कि यह व्यवसाय की परिवर्तित होती हुई स्थितियों अथवा जरूरतों के साथ सरलतापूर्वक समायोजन कर सकती है।
- लागत लेखा प्रणाली की संस्थापना व परिचालन लागत इससे प्राप्त लाभों के आधार पर न्यायपूर्ण है।

#### 4 / NEERAJ : लागत-निर्धारण के तत्त्व

प्रश्न 7. बताइये कि निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत हैं–

- (i) लागत लेखांकन को अनुमानों के लिये मूलभूत आँकड़े वित्तीय लेखांकन प्रणाली से प्राप्त होते हैं।
- (ii) लागत नियंत्रण का अर्थ है-कम्पनी को कम लाभ।
- (iii) जब ग्राहक उचित मूल्यों पर माल खरीदते हैं, तो उन्हें अधिक संतुष्टि मिलती है।
- (iv) यदि साधन दुर्लभ हैं, तो उत्पादन लागत कम होगी।
- (v) लागत लेखांकन एक विस्तृत शब्द है, जिसमें लागत-निर्धारण सम्मिलित होता है।
- (vi) लागत लेखांकन प्रबन्धकीय निर्णयों के लिये आँकड़े सुलभ कराता है।

उत्तर-(i) सही, (ii) गलत, (iii) सही, (iv) गलत, (v) सही, (vi) सही। प्रश्न 8. निम्नलिखित कथनों का उत्तर हाँ अथवा नहीं में दीजिये।

- (i) लागत लेखा प्रणाली से जो सूचना प्राप्त होती है, वे व्यवसाय के प्रतियोगियों के लिये भी उपयोगी हो सकती है।
- (ii) लागत लेखा की प्रभावी प्रणाली में श्रम की हानि को रोकने की जरूरत नहीं होती।
- (iii) लागत के अभिलेख वित्तीय लेखों द्वारा दिखाए जाने वाले परिणामों के सत्यापन में सहायक हो सकते हैं।
- (iv) लागत लेखा की एक मानक प्रणाली होती है, जो सभी प्रकार के संगठनों के लिये उपयुक्त है।
- (v) लागत लेखा प्रणाली की लागत इससे मिलने वाले लाभों
   से समर्थित होनी चाहिए।
- (vi) लागत लेखा प्रणाली वित्तीय लेखांकन प्रणाली से स्वतंत्र होनी चाहिए।

# Neeraj Publications www.neerajbooks.com

उत्तर-(i) नहीं, (ii) नहीं, (iii) हाँ, (iv) नहीं, (v) हाँ, (vi) नहीं।